हरीश नवल

ई-मेल-harishnaval@gmail.com

लाठी

छोटेलाल को सैर की आदत थी। रोज सुबह शहर की सीमा तक लगभग दो मील घूमने जाता था। शहर के बाहर छोटा-सा जंगल था। छोटेलाल का मन करता कि वहाँ घूमने जाए, किंतु वहाँ कुत्ते बहुत थे। बचपन से ही छोटेलाल कुत्तों से बेहद डरता था। मन की इच्छा उसने एक सयाने को बताई। सयाना बहुत सयाना था। उसने कहा, "कुत्तों से कभी डरो नहीं। जितना डरोगे, उतना ही वे तुम्हें परेशान करेंगे। लाठी आत्मरक्षा के लिए और कुछ रोटियाँ कुत्तों को डालने के लिए ले जाना। पहले लाठी दिखाना, फिर रोटियाँ डाल देना, वे कुछ नहीं कहेंगे। फिर आनंद से घूमना।"

लाठी और रोटी लेकर छोटेलाल अगली सुबह ही शहर के बाहरी जंगल में गया। कुत्तों ने दूर से देखा। भौंकने लगे। फिर तेजी से छोटेलाल की ओर आए। छोटेलाल ने लाठी ऊँची की, कुत्ते पीछे हटे। छोटेलाल ने रोटी के टुकड़े डालने शुरू किए। कुत्तों ने दुम हिलानी आरंभ की।

छोटेलाल अब हर सुबह वहीं घूमने लगा। कुत्ते उसे देखते ही आते और दुम हिलाते हुए उसकी दी हुई रोटियाँ खाते। धीरे-धीरे छोटेलाल ने लाठी ले जानी भी बंद कर दी। तब भी कुत्ते दुम हिलाते। कभी-कभी वह रोटी नहीं भी लेकर जाता, तो भी कुत्ते उसके चारों ओर खुशी से मँडराते।

एक बार छोटेलाल बीमार पड़ गया और बहुत दिनों तक घूमने नहीं गया। उसकी बीमारी के दिनों में उसका मित्र रतनचंद उसकी लाठी लेकर शहर के बाहर घूमने जाता रहा।

जब छोटेलाल स्वस्थ होकर एक सुबह घूमने निकला और शहर के बाहर पहुँचा तो उसने देखा कि कुत्ते रतनचंद के सामने दुम हिला रहे हैं; जो छोटेलाल की लाठी लिये था। छोटेलाल के पहुँचते ही वे कुत्ते भौंकते हुए छोटेलाल को काटने के लिए दौड़े।